اٰیَاتُهَا ٤٠ (٧٨) سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ (٨٠) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में ४० आयतें हैं सूरह नबा मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝١ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۝٢ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ

किस चीज़ के मुतअल्लिक़ ये सवाल कर रहे हैं? एक बड़ी ख़बर के मुतअल्लिक़? जिस में वो इख़तिलाफ

مُخْتَلِفُوْنَ ۝٣ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝٤ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝٥ اَلَمْ نَجْعَلِ

कर रहे हैं? हरगिज़ नहीं! अनक़रीब उन्हें पता चल जाएगा। फिर हरगिज़ नहीं! अनक़रीब उन्हें पता चल जाएगा। क्या

الْاَرْضَ مِهٰدًا ۝٦ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۝٧ وَّ خَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۝٨

हम ने ज़मीन को फ़र्श और पहाड़ों को मेख़ें नहीं बनाया? और हम ने तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया।

وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝٩ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۝١٠ وَّجَعَلْنَا

और हम ने तुम्हारी नीन्द को राहत का ज़रिया बनाया। और हम ने रात को परदा बनाया। और हम ने

النَّهَارَ مَعَاشًا ۝١١ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝١٢ وَّجَعَلْنَا

दिन को रोज़ी कमाने का वक़्त बनाया। और हम ने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए। और हम ने

سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۝١٣ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۝١٤

चमकता हुवा चिराग़ बनाया। और हम ने बादलों से ज़ोर से बेहने वाला पानी उतारा।

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۝١٥ وَّ جَنّٰتٍ اَلْفَافًا ۝١٦ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ

ताके हम उस के ज़रिए निकालें अनाज और सब्ज़ा। और घने बाग़ात। बेशक फ़ैसले का दिन

كَانَ مِيْقَاتًا ۝١٧ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۝١٨

मुक़र्ररा वक़्त है। जिस दिन सूर फूंका जाएगा, फिर तुम फ़ौज दर फ़ौज आओगे।

وَّ فُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۝١٩ وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ

और आसमान खोले जाएंगे, फिर वो दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे। और पहाड़ चलाए जाएंगे, फिर वो

سَرَابًا ۝٢٠ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝٢١ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ۝٢٢

सराब की तरह हो जाएंगे। यक़ीनन जहन्नम घात में है। सरकशों का ठिकाना है।

لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ۝٢٣ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۝٢٤

जिस में वो मुद्दतों पड़े रहेंगे। जिस में वो ठन्डी चीज़, पीने की चीज़ चख भी नहीं पाएंगे।

اِلَّا حَمِيْمًا وَّ غَسَّاقًا ﴿٢٥﴾ جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ

सिवाए गर्म पानी और पीप के। जो बराबर की सज़ा के तौर पर होगा। इस लिए के वो हिसाब की उम्मीद नहीं

حِسَابًا ﴿٢٧﴾ وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ

रखते थे। और हमारी आयतों को झुठलाते थे। और हर चीज़ को हम ने लिख कर (किताब में) महफ़ूज़ कर

كِتٰبًا ﴿٢٩﴾ فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ ع

रखा है। फिर तुम चखो, फिर हम तुम्हारे लिए हरगिज़ ज़्यादा नहीं करेंगे मगर अज़ाब ही को। यक़ीनन मुत्तक़ियों के लिए

مَفَازًا ﴿٣١﴾ حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَّكَاْسًا

कामयाबी है। बाग़ात और अंगूर। और नौजवान हमउम्र औरतें हैं। और लबालब भरे जाम

دِهَاقًا ﴿٣٤﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً

हैं। उस में वो न कोई बेहूदा बात और न झूठ सुनेंगे। तेरे रब की तरफ़ से बदले के तौर पर, हदये के तौर

حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ

पर भी, हिसाब के तौर पर भी। जो आसमानों और ज़मीन और उन चीज़ों का रब है जो उन के दरमियान हैं, रहमान है, वो

مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ

उस से बात करने की ताक़त भी नहीं रख सकेंगे। जिस दिन रूह और फ़रिशते सफ बाँध कर खड़े होंगे, बोल नहीं सकेंगे

اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ

मगर वही जिन को रहमान तआला इजाज़त दे और जो ठीक बात कहे। ये दिन हक़ है। फिर जो

شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾ اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚ يَّوْمَ يَنْظُرُ

चाहे अपने रब के पास ठिकाना बना ले। यक़ीनन हम ने तुम्हें क़रीबी अज़ाब से डराया। जिस दिन इन्सान

الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾ ع

देखेगा वो आमाल जो उस के हाथों ने आगे भेजे और काफ़िर कहेगा के ऐ काश के मैं मिट्टी होता।

سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ (٧٩)

اٰيَاتُهَا ٤٦ (٧٩) سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ (٨١) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में ४६ आयतें हैं सूरह नाज़िआत मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ﴿١﴾ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ﴿٢﴾ وَّالسّٰبِحٰتِ

उन फ़रिशतों की क़सम जो सख़्ती से जान निकालने वाले हैं। और उन फ़रिशतों की क़सम जो सहूलत से जान निकालने वाले हैं। और उन फ़रिशतों

سَبْحًا ۝۳ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۝۴ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۝۵ يَوْمَ وقف لازم

की क़सम जो तैर कर आने वाले हैं। फिर उन फ़रिशतों की क़सम जो दौड़ कर आने वाले हैं। फिर उन फ़रिशतों की क़सम जो उमूर की तदबीर करने वाले हैं।

تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝۶ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝۷ قُلُوْبٌ

जिस दिन ज़लज़ले वाली ज़लज़ला ले आएगी। जिस के पीछे आएगी पीछे आने वाली। दिल

يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۝۸ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝۹ يَقُوْلُوْنَ وقف لازم

उस दिन धड़क रहे होंगे। उन की नज़रें झुकी हुई होंगी। वो केहते हैं

ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ۝۱۰ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝۱۱

के क्या हम पेहली हालत में लौटाए जाएंगे? क्या जब के हम खोखली हड्डियाँ हो जाएंगे?

قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝۱۲ فَاِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝۱۳ وقف لازم

उन्हों ने कहा के तब तो ये लौटना खसारे वाला है। वो क़यामत तो सिर्फ़ एक ही डांट होगी।

فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝۱۴ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝۱۵ وقف لازم

के एक दम वो सब मैदान में हाज़िर हो जाएंगे। क्या तुम्हारे पास मूसा (अलैहिस्सलाम) का क़िस्सा पहोंचा?

اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝۱۶ اِذْهَبْ

जब के उन के रब ने उन को मुक़द्दस वादिए तुवा में आवाज़ दी। के जाओ फिरऔन के पास,

اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝۱۷ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ۝۱۸

इस लिए के उस ने सरकशी की है। और कहो के क्या तुझे रग़बत है के तू पाक साफ बन जाए?

وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۝۱۹ فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۝۲۰

और मैं तुझे रास्ता दिखाऊँ तेरे रब की तरफ के तुझे डर पैदा हो। तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फिरऔन को बड़ा मोअजिज़ा दिखाया।

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۝۲۱ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ۝۲۲ فَحَشَرَ فَنَادٰى ۝۲۳

फिर उस ने झुठलाया और नाफरमानी की। फिर वो पीठ फेर कर भागा। फिर उस ने लोगों को इकट्ठा किया, फिर पुकारा।

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۝۲۴ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ

और कहा के मैं ही तुम्हारा रब्बे आला हूँ। फिर अल्लाह ने उस को दुन्या और आखिरत के अज़ाब में

وَالْاُوْلٰى ۝۲۵ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝۲۶ ع ۱

पकड़ लिया। यक़ीनन उस में अलबत्ता इबरत है उस शख्स के लिए जो डरे।

ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ ۭ بَنٰىهَا ۝۲۷ وقفة رَفَعَ سَمْكَهَا

क्या तुम्हारा पैदा करना मुशकिल है या आसमान का, जो अल्लाह ने बनाया? जिस की छत को उस ने बुलन्द किया,

فَسَوّٰىهَا ﴿۲۸﴾ وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ﴿۲۹﴾ وَالْاَرْضَ بَعْدَ

फिर उस को ठीक बनाया। और उस की रात को तारीक बनाया और उस की धूप को निकाला। और उस के बाद

ذٰلِكَ دَحٰىهَا ﴿۳۰﴾ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ﴿۳۱﴾ وَالْجِبَالَ

ज़मीन बिछाई। उस में से उस का पानी और उस की चरागाह (यानी चारे) को निकाला। और पहाड़ों

اَرْسٰىهَا ﴿۳۲﴾ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿۳۳﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ

को गाड़ दिया। तुम्हारे फ़ाइदे के लिए और चौपाओं के लिए। फिर जब सब से बड़ी मुसीबत

الْكُبْرٰى ﴿۳۴﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿۳۵﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ

आ जाएगी। जिस दिन इन्सान अपने किए को याद करेगा। और जहन्नम खोल दी जाएगी

لِمَنْ يَّرٰى ﴿۳۶﴾ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿۳۷﴾ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿۳۸﴾

उस शख़्स के लिए जो देखे। फिर जिस ने सरकशी की, और दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह दी,

فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِىَ الْمَاْوٰى ﴿۳۹﴾ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى

तो जहन्नम ही उस का ठिकाना है। और जो डरा अपने रब के सामने खड़ा होने से और उस ने

النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿۴۰﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِىَ الْمَاْوٰى ﴿۴۱﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ

अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोका, तो यक़ीनन जन्नत ही उस का ठिकाना है। वो आप से

عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰهَا ﴿۴۲﴾ فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰهَا ﴿۴۳﴾

क़यामत के मुतअल्लिक़ सवाल करते हैं के कब उसे वाक़ेअ होना है? उस के बताने में आप का क्या तअल्लुक़?

اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰهَا ﴿۴۴﴾ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰهَا ﴿۴۵﴾

आप के रब ही की तरफ़ उस के इल्म का मुन्तहा है। आप तो सिर्फ़ डराने वाले हैं उस शख़्स को जो उस से डरे।

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰهَا ﴿۴۶﴾ ع ۲

जिस दिन वो क़यामत को देखेंगे गोया के वो (दुन्या में) सिर्फ़ एक शाम या एक सुबह ठेहरे हैं।

اٰيَاتُهَا ۴۲ (۸۰) سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ (۲۴) رُكُوْعُهَا ۱

उस में ४२ आयतें हैं सूरह अबस मक्का में नाज़िल हुई और १ रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ﴿۱﴾ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿۲﴾ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ

मुंह बिगाड़ा और ऐराज़ किया। इस वजह से के आप के पास एक अन्धा आया। आप को क्या मालूम शायद वो

يَزَّكّٰٓى ۝٣ اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۝٤ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۝٥

संवर जाए। या नसीहत ले, फिर उसे नसीहत फ़ाइदा दे। हाँ जो बेपरवाही बरतता है,

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ۝٦ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ۝٧ وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ

तो आप उस के पीछे पड़ते हो? हालांके आप पर कुछ नहीं इस में के वो पाक नहीं होता। और हाँ जो आप

يَسْعٰى ۝٨ وَهُوَ يَخْشٰى ۝٩ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۝١٠ كَلَّآ اِنَّهَا

के पास आता है दौड़ कर और वो डरता भी है, तो आप उस से तग़ाफ़ुल बरतते हो? हरगिज़ नहीं! ये तो

وقف لازم

تَذْكِرَةٌ ۝١١ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝١٢ فِىْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝١٣ مَّرْفُوْعَةٍ

नसीहत है। फिर जो चाहे इस से नसीहत पकड़े। ये बाइज़्ज़त सहीफ़ों में है। जो बुलन्द हैं,

مُّطَهَّرَةٍ ۝١٤ بِاَيْدِىْ سَفَرَةٍ ۝١٥ كِرَامٍۭ بَرَرَةٍ ۝١٦ قُتِلَ الْاِنْسَانُ

साफ़ सुथरे हैं। ऐसे लिखने वाले फ़रिशतों के हाथों में है, जो बाइज़्ज़त फ़रमांबरदार हैं। इन्सान मारा जाए

مَآ اَكْفَرَهٗ ۝١٧ مِنْ اَىِّ شَىْءٍ خَلَقَهٗ ۝١٨ مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ

के कितना वो नाशुकरा है। किस चीज़ से अल्लाह ने उस को पैदा किया? नुत्फ़े से उस को पैदा किया। फ़िर मुअय्यन

خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۝١٩ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ۝٢٠ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۝٢١

मिक़दार के साथ उस को बनाया। फिर रास्ता उस के लिए आसान किया। फिर उस को मौत दी, फिर उस को क़ब्र में पहोंचाया।

ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ۝٢٢ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ۝٢٣ فَلْيَنْظُرِ

फिर जब वो अल्लाह चाहेगा तो उसे क़ब्र से उठाएगा। हरगिज़ नहीं! अब तक उस ने नहीं किया वो जिस का अल्लाह ने उस को हुक्म

الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ۝٢٤ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۝٢٥ ثُمَّ شَقَقْنَا

दिया। फिर इन्सान को चाहिए के वो नज़र उठाए अपने खाने की तरफ। के हम ने पानी ऊपर से डाला। फिर हम ने

الْاَرْضَ شَقًّا ۝٢٦ فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ۝٢٧ وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ۝٢٨

ज़मीन को फाड़ा। फिर हम ने उस में अनाज उगाया। और अंगूर और तरकारी।

وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ۝٢٩ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ۝٣٠ وَّ فَاكِهَةً وَّاَبًّا ۝٣١

और ज़ैतून और खजूर। और घने बाग़ात। और मेवा और चारा।

مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۝٣٢ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۝٣٣

तुम्हारे अपने और तुम्हारे चौपाओं के लिए फ़ाइदे के खातिर। फिर जब शोर वाली क़यामत आ जाएगी।

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ۝٣٤ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ۝٣٥ وَصَاحِبَتِهٖ

उस दिन हर शख़्स भागेगा अपने भाई से। और अपनी माँ और अपने बाप से। और अपनी बीवी

وَبَنِيْهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ﴿٣٧﴾

और अपने बेटों से। उन में से हर शख़्स के लिए उस दिन एक फ़िक्र होगा जो उस को हर चीज़ से बेपरवाह कर देगा।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾

कुछ चेहरे उस दिन चमक रहे होंगे। हंसी ख़ुशी।

وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾

और कुछ चेहरे उस दिन (ऐसे होंगे के) उन पर ग़ुबार होगा। उन पर सियाही (यानी ज़िल्लत) छाई होगी।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾ ع

यही बदकार काफ़िर होंगे।

سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ مَكِّيَّةٌ (٨١) (٧)

اٰيَاتُهَا ٢٩ رُكُوْعُهَا ١

और १ रूकूअ है सूरह तकवीर मक्का में नाज़िल हुई उस में २९ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْجِبَالُ

जब सूरज लपेट लिया जाए। और जब सितारे बेनूर हो जाएं। और जब पहाड़

سُيِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ﴿٥﴾

चलाए जाएं। और जब दस महीने की गाभन ऊँटनी खुली छोड़ दी जाए। और जब वहशी जानवर इकट्ठे किए जाएं।

وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾ وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾

और जब समन्दर आग बना दिए जाएं। और जब तमाम इन्सानों की एक एक क़िस्म को जमा किया जाए।

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَاِذَا الصُّحُفُ

और जब ज़िन्दा दरगोर की हुई बच्ची से पूछा जाए, के किस गुनाह में उसे क़त्ल किया गया? और जब नामअे आमाल

نُشِرَتْ ﴿١٠﴾ وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَاِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾

खोले जाएं। और जब आसमान की खाल खींच ली जाए। और जब जहन्नम भड़काई जाए।

وَاِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

और जब जन्नत क़रीब लाई जाए। तो हर शख़्स जान लेगा जो कुछ वो ले कर आया है। फिर मैं क़सम

فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

खाता हूँ उन सितारों की जो पीछे हटने वाले, सीधे चलने वाले, छुपने वाले हैं। रात की क़सम जब वो तारीक हो जाए।

وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿١٩﴾ ذِىْ

सुबह की क़सम जब वो सांस ले (आ जाए)। यक़ीनन ये क़ुरआन ऐसे भेजे हुए मुअज़्ज़ज़ फ़रिशते का कलाम है, जो क़ूव्वत

قُوَّةٍ عِنْدَ ذِى الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ﴿٢٠﴾ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ﴿٢١﴾

वाला, अर्श वाले के पास रेहने वाला, मरतबे वाला है, फरिशतों का मुताअ, वहाँ अमानतदार भी है।

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿٢٣﴾

और तुम्हारे साथी (नबी) मजनून नहीं हैं। बेशक उन्हों ने उस फ़रिशते को देखा है साफ आसमान के किनारे में।

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ

और वो ग़ैब की चीज़ों (के बतलाने) में बखील नहीं है। और क़ुरआन शैतान मरदूद का कलाम

رَّجِيْمٍ ﴿٢٥﴾ فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

नहीं है। फिर तुम कहाँ जा रहे हो? ये क़ुरआन तो तमाम जहान वालों के लिए नसीहत है।

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ

उस शख़्स के लिए जो तुम में से चाहे के वो सीधे रास्ते पर रहे। और अल्लाह रब्बुल आलमीन

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع

की मशीयत पर तुम्हारा इरादा मौक़ूफ़ है।

اٰيَاتُهَا ١٩ (٨٢) سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ (٨٢) رُكُوْعُهَا ١

और १ रूकूअ है सूरह इन्फ़ितार मक्का में नाज़िल हुई उस में १९ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْبِحَارُ

जब आसमान फट जाए। और जब तारे झड़ जाएं। और जब समन्दर बहा दिए

فُجِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ﴿٤﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ

जाएं। और जब क़ब्रें उखेड़ दी जाएं। तो हर शख़्स जान लेगा जो उस ने आगे भेजा

وَاَخَّرَتْ ﴿٥﴾ يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ﴿٦﴾

और पीछे छोड़ा। ऐ इन्सान! तुझे किस चीज़ ने धोके में डाल रखा है तेरे रब्बे करीम से?

الَّذِىْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾ فِىْٓ اَىِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ

जिस ने तुझे पैदा किया, फिर तुझे दुरुस्त बनाया, फिर तुझे बराबर किया। जौनसी सूरत में उस ने चाहा

رَكَّبَكَ ۝٨ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۝٩ وَاِنَّ عَلَيْكُمْ

तुझे जोड़ दिया। हरगिज़ नहीं! बल्के तुम हिसाब को झुठलाते हो। और यक़ीनन तुम पर निगराँ फ़रिशते

لَحٰفِظِيْنَ ۝١٠ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ۝١١ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝١٢

मुतअय्यन हैं। किरामन कातिबीन। जानते हैं वो जो तुम करते हो।

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۝١٣ وَّاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ۝١٤

बेशक नेक लोग नेअमतों में होंगे। और बदकार बेशक दोज़ख में होंगे।

يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ۝١٥ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ۝١٦

वो उस में दाखिल होंगे हिसाब के दिन। और वो उस से ग़ाइब नहीं होंगे।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝١٧ ثُمَّ مَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝١٨

और तुम क्या समझे के हिसाब का दिन क्या चीज़ है? फिर तुम क्या समझे के हिसाब का दिन क्या चीज़ है?

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ۭ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۝١٩ ع ١٩

जिस दिन कोई शख़्स किसी शख़्स की नफारसानी पर क़ादिर नहीं होगा। और तमाम उमूर उस दिन अल्लाह तआला के पास होंगे।

اٰيَاتُهَا ٣٦ (٨٣) سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ (٨٦) رُكُوْعُهَا ١

उस में ३६ आयतें हैं सूरह मुतफ्फिफीन मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۝١ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ

हलाकत है कम देने वालों के लिए। जब वो लोगों से नाप कर लें

يَسْتَوْفُوْنَ ۝٢ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ۝٣

तो पूरा लेते हैं। और जब उन को नाप कर दें या उन को वज़न कर के दें तो कम कर के देते हैं।

اَلَا يَظُنُّ اُولٰۗىِٕكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۝٤ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٥

क्या उन्हें ये गुमान नहीं के वो क़ब्रों से ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे? एक बड़े दिन में।

يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ

जिस दिन तमाम इन्सान रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे। हरगिज़ नहीं! यक़ीनन बदकारों का

الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۝٧ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ۝٨ كِتٰبٌ

नामअे आमाल सिज्जीन में है। और तुम क्या समझे के सिज्जीन क्या है? एक लिखी

مَّرْقُوْمٌ ۝٩ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٠ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ

हुई किताब है। हलाकत है उस दिन उन झुठलाने वालों के लिए। जो हिसाब के दिन को झुठलाते

الدِّيْنِ ۝١١ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢ اِذَا تُتْلٰى

हैं। और उस को नहीं झुठलाता मगर हर हद से आगे बढ़ने वाला गुनहगार। जब उस पर हमारी आयतें

عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣ كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ

तिलावत की जावें तो कहे के ये तो पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। हरगिज़ नहीं! बल्के उन

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝١٤ كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ

के दिलों पर उन के करतूत ने ज़ंग चढ़ा दिया है। हरगिज़ नहीं! यक़ीनन ये लोग अपने रब से

يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ۝١٥ ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ۝١٦

उस दिन हिजाब में होंगे। फिर वो दोज़ख में ज़रूर दाखिल होंगे।

ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝١٧ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ

फिर कहा जाएगा के यही वो अज़ाब है जिस को तुम झुठलाते थे। हरगिज़ नहीं! बेशक नेक लोगों का

الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ۝١٨ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ۝١٩ كِتٰبٌ

नामअे आमाल इल्लीयीन में है। और तुम क्या समझे हो के इल्लीयीन क्या है? एक लिखी हुई

مَّرْقُوْمٌ ۝٢٠ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝٢١ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۝٢٢

किताब है। जिस के पास मुक़र्रब फरिशते मौजूद रेहते हैं। यक़ीनन नेक लोग नेअमतों में होंगे।

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ۝٢٣ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ

तख़्तों पर बैठ कर देख रहे होंगे। उन के चेहरों में आप नेअमत की ताज़गी मालूम कर

النَّعِيْمِ ۝٢٤ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۝٢٥ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ۭ

लोगे। उन्हें पिलाई जाएगी खालिस शराब, जिस पर मुहर लगी हुई होगी। जिस की मुहर मुश्क की होगी।

وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ۝٢٦ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۝٢٧

और उसी में तनाफुस करने वालों को तनाफुस करना चाहिए। और उस शराब की आमेज़िश तसनीम से होगी।

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ۝٢٨ اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا

एक चशमे से जिस चशमे से मुक़र्रबीन पिएंगे। बेशक मुजरिम लोग ईमान

مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ۝٢٩ وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ۝٣٠

वालों पर हंसा करते थे। और जब उन पर वो गुज़रते तो आपस में आँखें मारते थे।

وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا

और जब वो अपने घर वालों के पास पलटते थे, तो पलट कर भी मज़े ले कर उन की बातें करते थे। और जब वो उन को देखते

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَالْيَوْمَ

थे तो केहते थे के ये लोग गुमराह लोग हैं। हालांके वो उन पर मुहाफिज़ बना कर नहीं भेजे गए। फिर आज

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ ۙ

ईमान वाले काफिरों से हंसते हैं। तख्तों पर बैठे

يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ ع ١

देख रहे हैं। के क्या अब कुफ्फार को उन के किए का बदला मिल गया?

سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ (٨٤)

اٰيَاتُهَا ٢٥ رُكُوْعُهَا ١

और १ रूकूअ है सूरह इन्शिक़ाक़ मक्का में नाज़िल हुई उस में २५ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾

जब आसमान फट जाए। और आसमान कान लगाए हुए है अपने रब के हुक्म के लिए और वो उसी के लाइक़ है।

وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَاَذِنَتْ

और जब ज़मीन फैला दी जाए। और वो डाल दे उन चीज़ों को जो उस में हैं और खाली हो जाए। और ज़मीन भी कान लगाए

لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ

हुए है अपने रब के हुक्म के लिए और वो उसी के लाइक़ है। ऐ इन्सान! यक़ीनन तेरे रब की तरफ़ पहोंचने के लिए

كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ﴿٦﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ﴿٧﴾

तुझे खूब मेहनत करनी है, फिर तू उस से मिलने वाला है। तो जिस को उस का नामअे आमाल दाहने हाथ में दिया जाएगा,

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ﴿٨﴾ وَّيَنْقَلِبُ اِلٰٓى اَهْلِهٖ

तो आगे उस से आसान हिसाब लिया जाएगा। और वो अपने घरवालों की तरफ खुश खुश

مَسْرُوْرًا ﴿٩﴾ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ

वापस आएगा। और जिस का नामअे आमाल उस की पीठ पीछे से दिया जाएगा, तो वो

يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ﴿١١﴾ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ فِيْٓ اَهْلِهٖ

मौत को पुकारेगा। और आग में दाखिल होगा। इस लिए के वो अपने घर वालों में

مَسْرُوْرًا ﴿١٣﴾ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ﴿١٤﴾ بَلٰٓى ۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ

खुश रेहता था। उस का गुमान था के वो हरगिज़ लौट कर आएगा नहीं। क्यूं नहीं! यक़ीनन उस का रब उस

بِهٖ بَصِيْرًا ﴿١٥﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ

को देख रहा था। फिर मैं शफक़ की क़सम खाता हूँ। और रात की क़सम खाता हूँ और उन चीज़ों की जिस को रात

وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿١٩﴾

ने जमा कर लिया है। चाँद की क़सम जब वो पूरा रोशन हो जाए। तुम ज़रूर एक हाल से दूसरे हाल पर चढ़ोगे।

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ

फिर उन्हें क्या हुवा के वो ईमान नहीं लाते? और जब उन पर क़ुरआन पढ़ा जाता है

لَا يَسْجُدُوْنَ ﴿٢١﴾ السجدة بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاللّٰهُ

तो सज्दा नहीं करते। बल्के काफिर लोग झुठलाते हैं। और अल्लाह

اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٤﴾

खूब जानता है उस को जो वो दिल में भरे रखते हैं। तो आप उन को दर्दनाक अज़ाब की बशारत सुना दीजिए।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٢٥﴾

मगर वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए ऐसा अज्र होगा जो खत्म नहीं होगा।

سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ (٨٥) (٢٧)

اٰيَاتُهَا ٢٢ رُكُوْعُهَا ١

और १ रूकूअ है सूरह बुरूज मक्का में नाज़िल हुई उस में २२ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدٍ

बुरजों वाले आसमान की क़सम! वादे वाले दिन की क़सम! हाज़िर होने वाले

وَّمَشْهُوْدٍ ﴿٣﴾ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ

की क़सम और हाज़िरी के दिन की क़सम! खन्दक़ों वाले मारे जाएं। ईंधन वाली

الْوَقُوْدِ ﴿٥﴾ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ﴿٦﴾ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ

आग वाले। जब वो उस के ऊपर बैठे हुए थे। और वो देख रहे थे जो कुछ वो ईमान वालों

بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ﴿٧﴾ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا

के साथ कर रहे थे। और वो ईमान वालों से सिर्फ इसी बात का इन्तिक़ाम ले रहे थे के वो ईमान

بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٨ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
लाए हैं क़ाबिले तारीफ ज़बर्दस्त अल्लाह पर। उस अल्लाह पर जिस के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ
और अल्लाह हर चीज़ पर निगराँ है। बेशक जिन लोगों ने ईमान वाले मर्दों

وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ
और औरतों को ईज़ा दी, फिर उन्हों ने तौबा नहीं की तो उन के लिए जहन्नम का अज़ाब है और उन के लिए जलने का

الْحَرِيْقِ ۝١٠ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ
अज़ाब है। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए जन्नतें हैं

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۬ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ۝١١
जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी। ये बड़ी कामयाबी है।

اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ۝١٢ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَ يُعِيْدُ ۝١٣ وَهُوَ
यक़ीनन तेरे रब की पकड़ बड़ी सख्त है। वही पेहली मरतबा पैदा करता है और वही दोबारा पैदा करेगा। और वो

الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝١٤ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۝١٥ فَعَّالٌ
बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, बहोत ज़्यादा महब्बत वाला, अर्श का मालिक बुज़ुर्ग है। करता है वही

لِّمَا يُرِيْدُ ۝١٦ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ۝١٧ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ۝١٨
जिस का वो इरादा करता है। क्या आप के पास लशकरों का क़िस्सा पहोंचा? फिरऔन और समूद का।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ۝١٩ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ
बल्के काफिर लोग झुठलाने में लगे हैं। और अल्लाह उन को हर तरफ से घेरे

مُّحِيْطٌ ۝٢٠ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۝٢١ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝٢٢ ع
हुए है। बल्के ये बुज़ुर्गी वाला क़ुरआन, लौहे महफ़ूज़ में है।

رکوعها ١ (٣٦) سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ (٨٦) اٰياتها ١٧

और १ रुकूअ है सूरह तारिक़ मक्का में नाज़िल हुई उस में १७ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝١ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝٢ النَّجْمُ
आसमान की क़सम और रात में आने वाले की क़सम! और तुम क्या समझे रात में आने वाला क्या है? चमकता हुवा

الثَّاقِبُ ۙ﴿٣﴾ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ؕ﴿٤﴾ فَلْيَنْظُرِ

तारा है। कोई शख्स भी नहीं है जिस पर निगरान (फरिशता) मुक़र्रर न हो। तो इन्सान को चाहिए के देखे

الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ؕ﴿٥﴾ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۙ﴿٦﴾ يَّخْرُجُ

के किस चीज़ से वो पैदा किया गया है। वो पैदा किया गया उछलने वाले पानी से। जो निकलता है

مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ؕ﴿٧﴾ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ؕ﴿٨﴾

रीढ़ की और सीने की हड्डियों के दरमियान से। यक़ीनन वो उस के दोबारा लाने पर ज़रूर क़ादिर है।

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۙ﴿٩﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ؕ﴿١٠﴾ وَالسَّمَآءِ

जिस दिन भेदों का इम्तिहान लिया जाएगा। फिर न इन्सान में खुद कोई कूव्वत होगी और न (उस का) कोई मददगार। बारिश

ذَاتِ الرَّجْعِ ۙ﴿١١﴾ وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۙ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ

वाले आसमान की क़सम! और फटने वाली ज़मीन की क़सम! बेशक ये कुरआन क़ौले

فَصْلٌ ۙ﴿١٣﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ؕ﴿١٤﴾ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۙ﴿١٥﴾

फेसल है। और ये कोई मज़ाक़ नहीं है। काफिर भी मक्र कर रहे हैं।

ع ١٧ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ۚ﴿١٦﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

और मैं भी तदबीर कर रहा हूँ। फिर काफिरों को मुहलत दे दीजिए, उन को थोड़ी सी मुहलत दे दीजिए।

اٰيَاتُهَا ١٩ (٨٧) سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ (٨) رُكُوْعُهَا ١

उस में १९ आयतें हैं सूरह आला मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ﴿١﴾ الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۙ﴿٢﴾ وَالَّذِيْ

अपने बुलन्दतरीन रब के नाम की तस्बीह कीजिए। जिस ने मखलूक़ पैदा की, फिर उस ने दुरुस्त बनाया। और जिस ने

قَدَّرَ فَهَدٰى ۙ﴿٣﴾ وَالَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۙ﴿٤﴾ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً

मिक़दार से बनाया, फिर रास्ता दिखाया। और जिस ने चारा उगाया। फिर उस को काला कूड़ा करकट

اَحْوٰى ؕ﴿٥﴾ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۙ﴿٦﴾ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ

बना दिया। अनक़रीब हम आप को पढ़ाएंगे, फिर आप भूलेंगे नहीं, मगर जो अल्लाह चाहे। यक़ीनन वो

يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ؕ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ

जानता है ज़ोर से कही हुई और आहिस्ता कही हुई बात को। और हम आप के लिए आसानी वाली (मिल्लत) को आसान कर के देंगे।

اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۝٩ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۝١٠

इस लिए आप नसीहत कीजिए अगर नसीहत फाइदा दे। अनक़रीब नसीहत हासिल करेगा वो शख़्स जो डरेगा।

وَ يَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۝١١ الَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۝١٢

और उस से दूर रहेगा वो बदबख़्त, जो बड़ी आग में दाख़िल होगा।

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝١٣ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝١٤

फिर वो उस में न मरेगा, न जिएगा। यक़ीनन कामयाब है वो शख़्स जिस ने तज़किया किया।

وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝١٥ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝١٦

और अपने रब का नाम लिया, फिर नमाज़ पढ़ी। बल्के तुम दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह देते हो।

وَ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝١٧ اِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ

हालांके आख़िरत बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रेहने वाली है। यही बात पेहले सहीफ़ों

الْاُوْلٰى ۝١٨ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۝١٩ ع ١٢

में है। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और मूसा (अलैहिस्सलाम) के सहीफ़ों में है।

(٨٨) سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ (٦٨)

اٰيَاتُهَا ٢٦ رُكُوْعُهَا ١

उस में २६ आयतें हैं और १ रूकूअ है सूरह ग़ाशिया मक्का में नाज़िल हुई

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝١ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝٢

क्या आप के पास ढांपने वाली (क़यामत) का क़िस्सा पहोंचा? उस दिन कुछ चेहरे ज़लील होंगे।

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝٣ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝٤ تُسْقٰى

काम करने वाले, (बुरे काम की वजह से) थके हुए होंगे। वो गर्म आग में दाख़िल होंगे। खौलते हुए चशमे से

مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝٥ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۝٦ لَّا يُسْمِنُ

(पानी) उन्हें पीने को दिया जाएगा। उन के लिए कोई खाना नहीं होगा मगर झाड़ काँटों वाला। जो न मोटा करे

وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۝٧ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝٨

और न भूक के कुछ काम आए। कुछ चेहरे उस दिन तर व ताज़ा होंगे।

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝٩ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝١٠ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا

अपने अमल से ख़ुश होंगे। ऊँची जन्नत में होंगे। जिस में वो लग़्व बात

وقف لازم

لَاغِيَةً ﴿١١﴾ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ﴿١٣﴾

न सुनेंगे। जिस में बेहते हुए चशमे होंगे। उस में ऊँचे ऊँचे तख्त होंगे।

وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ﴿١٤﴾ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ﴿١٥﴾ وَّزَرَابِيُّ

और तरतीब से रखे हुए प्याले होंगे। और सफ ब सफ रखे हुए तकिए होंगे। और फैलाए हुए

مَبْثُوْثَةٌ ﴿١٦﴾ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾

फर्श होंगे। क्या फिर वो देखते नहीं हैं ऊँटों की तरफ के कैसे वो पैदा किए गए?

وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ

और आसमान की तरफ के कैसे उसे ऊँचा किया गया? और पहाड़ों की तरफ के कैसे

نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾ فَذَكِّرْ اِنَّمَآ

उन्हें गाड़ा गया? और ज़मीन की तरफ के कैसे उसे बिछाया गया? फिर आप नसीहत कीजिए। आप तो सिर्फ

اَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾ اِلَّا مَنْ

नसीहत करने वाले हैं। आप उन पर मुसल्लत नहीं किए गए हैं। मगर वो जिस ने

تَوَلّٰى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

मुंह फेरा और कुफ्र किया। तो अल्लाह उसे बड़ा अज़ाब देगा।

اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

यक़ीनन हमारी तरफ उन्हें लौटना है। फिर हमारे ज़िम्मे उन का हिसाब लेना है।

اٰيَاتُهَا ٣٠ (٨٩) سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ (١٠) رُكُوْعُهَا ١

उस में ३० आयतें हैं सूरह फ़ज्र मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ

फजर की क़सम! दस रातों की क़सम! जुफ्त और ताक़ की क़सम! रात की

اِذَا يَسْرِ ﴿٤﴾ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ

क़सम जब वो चल रही हो! क्या उस में अक़लमन्द के लिए क़सम है? क्या आप ने नहीं देखा के

فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ

आप के रब ने क़ौमे आद के साथ क्या किया? सुतूनों वाले इरम के साथ क्या किया? के उस जैसी क़ौम

مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

नहीं पैदा की गई शेहरों में। और समूद के साथ क्या किया, जिस ने वादिए (क़ुरा) में चटानों को तराशा।

وَ فِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾

और मेख़ों वाले फिरऔन के साथ क्या किया? जिन्हों ने शेहरों में सर उठाया था।

فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ

फिर वहाँ बकस्रत फसाद फैलाया। तो उन पर तेरे रब ने अज़ाब का कोड़ा

عَذَابٍ ﴿١٣﴾ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ

फिटकारा। यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता ताक में है। फिर इन्सान के जब उस का

إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ ۙ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾

रब उस का इम्तिहान लेता है, फिर उसे इज़्ज़त देता है और नेअमतें देता है, तो वो केहता है के मुझे मेरे रब ने इज़्ज़त दी।

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۙ فَيَقُولُ رَبِّي

और जब उसे आज़माता है, फिर उस पर उस की रोज़ी तंग करता है, तो वो केहता है के मेरे रब ने मेरी

أَهَانَنِ ﴿١٦﴾ كَلَّا بَل لَّا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحَاضُّونَ

इहानत की। हरगिज़ नहीं! बल्के तुम ही यतीम की इज़्ज़त नहीं करते। और मिस्कीन को

عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿١٨﴾ وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾

खाना देने की तरग़ीब नहीं देते। और तुम मीरास सारा समेट कर हड़प कर जाते हो।

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا

और तुम माल से महब्बत करते हो बहोत ही ज़्यादा महब्बत। हरगिज़ नहीं! जब ज़मीन कूट कूट कर

دَكًّا ﴿٢١﴾ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِيءَ يَوْمَئِذٍ

नेस्त कर दी जाएगी। और तेरा रब और फरिशते सफ ब सफ आएंगे। और उस दिन

بِجَهَنَّمَ ۚ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾

जहन्नम लाई जाएगी। उस दिन इन्सान नसीहत लेगा, लेकिन अब नसीहत लेने का वक्त कहाँ?

يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ

वो कहेगा के ऐ काश के मैं ने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए (नेक अमल) आगे भेजे होते। उस दिन उस के

عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٥﴾ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ﴿٢٦﴾ يَا أَيَّتُهَا

अज़ाब जैसा कोई अज़ाब न देगा। और न उस की जकड़ की तरह किसी की जकड़ होगी। ऐ

النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

इत्मिनान वाली रूह! तू अपने रब की तरफ वापस चल, तू उस से राज़ी और वो तुझ से राज़ी।

فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿٢٩﴾ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣٠﴾

तू मेरे बन्दों में शामिल हो जा। और मेरी जन्नत में दाखिल हो जा।

سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ (٣٥) (٩٠)

اٰيَاتُهَا ٢٠ رُكُوْعُهَا ١

और १ रूकूअ है सूरह बलद मक्का में नाज़िल हुई उस में २० आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾

मैं इस शेहर (मक्का) की क़सम खाता हूँ! और आप इस शेहर में हलाल (न के मुहरिम) उतरने वाले हो।

وَ وَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ﴿٤﴾

बाप की क़सम और औलाद की क़सम! यक़ीनन हम ने इन्सान को मश्क़्क़त में पैदा किया है।

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ﴿٥﴾ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا

क्या वो ये समझता है के उस पर किसी को क़ुदरत नहीं है? वो केहता है के मैं ने ढ़ेरों माल

لُّبَدًا ﴿٦﴾ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٧﴾ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ

लुटाया। क्या वो समझता है के उस को किसी ने देखा नहीं। क्या हम ने उस की दो आँखें

عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾

नहीं बनाईं? और ज़बान और दो होंट नहीं बनाए? और हम ने उसे दोनों रास्ते दिखा दिए।

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾

फिर वो घाटी पर से नहीं गुज़रा? और तुम क्या समझे के घाटी क्या है?

فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَّتِيْمًا

गरदन को आज़ाद करना है। या भूक वाले दिन में यतीम

ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾ اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ

रिश्तेदार को खिलाना। या ख़ाकनशीन मोहताज को खाना खिलाना। फिर जो ईमान वालों

مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾

में से हैं और जिन्हों ने सब्र की एक दूसरे को फेहमाइश की और रहम करने की एक दूसरे को तलक़ीन की,

أُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝١٨ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا

ये दाईं जानिब वाले हैं। और जिन्हों ने हमारी आयात के साथ कुफ़्र किया

هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝١٩ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝٢٠ ع ١٥

ये बाईं जानिब वाले हैं। उन के ऊपर से आग बन्द कर दी गई है।

سُوْرَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ (٢٦) (٩١)

اٰيَاتُهَا ١٥ رُكُوْعُهَا ١

और १ रूकूअ है सूरह शम्स मक्का में नाज़िल हुई उस में १५ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ۝١ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ۝٢ وَالنَّهَارِ

सूरज और उस के चढ़ने की क़सम। चाँद की क़सम जब वो उस के पीछे आए। दिन की क़सम

اِذَا جَلّٰىهَا ۝٣ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ۝٤ وَالسَّمَآءِ

जब वो सूरज को रोशन करे। रात की क़सम जब वो उस को छुपा ले। आसमान की क़सम और उस के बनाने

وَمَا بَنٰىهَا ۝٥ وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ۝٦ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝٧

वाले की क़सम! ज़मीन की क़सम और उस के बिछाने वाले की क़सम! नफ्स की क़सम और उस को दुरुस्त बनाने वाले की क़सम।

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَ تَقْوٰىهَا ۝٨ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝٩

फिर उसी ने उस को उस की ढ़टाई और उस के तक़्वे का इल्हाम किया। यक़ीनन वो शख्स कामयाब है जिस ने इस (नफ्स) का तज़किया

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝١٠ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ۝١١

किया। और नाकाम है वो जिस ने उस को खराब किया। क़ौमे समूद ने अपनी सरकशी की वजह से झुठलाया।

اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۝١٢ فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ

जब उन में से बड़ा बदबख्त इन्सान उठा। उन से अल्लाह के पैग़म्बर (सालेह अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम अल्लाह की ऊँटनी से और उस

اللّٰهِ وَ سُقْيٰهَا ۝١٣ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۫ فَدَمْدَمَ

के पीने की बारी से डरो। लेकिन उन्हों ने (सालेह अलैहिस्सलाम) को झुठलाया, फिर उन्हों ने ऊँटनी के पैर काट दिए। तो उन पर

عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝١٤ وَلَا يَخَافُ

उन के रब ने उन के गुनाह की वजह से अज़ाब भेज दिया, फिर उन को बराबर कर दिया, अल्लाह को उन के अन्जाम का

عُقْبٰىهَا ۝١٥ ع ١

डर नहीं था।

اٰيَاتُهَا ٢١ (٩٢) سُوۡرَةُ الَّيۡلِ مَكِّيَّةٌ (٩) رُكُوۡعُهَا ١

उस में २१ आयतें हैं सूरह लैल मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالَّيۡلِ اِذَا يَغۡشٰى ۝١ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝٢ وَمَا خَلَقَ

रात की क़सम जब वो छा जाए! दिन की क़सम जब के वो रोशन हो जाए! नर और मादा को पैदा करने

الذَّكَرَ وَالۡاُنۡثٰٓى ۝٣ اِنَّ سَعۡيَكُمۡ لَشَتّٰى ۝٤ فَاَمَّا مَنۡ اَعۡطٰى

वाले की क़सम! बेशक तुम्हारी कोशिश अलबत्ता अलग अलग है। फिर जिस ने दिया

وَاتَّقٰى ۝٥ وَصَدَّقَ بِالۡحُسۡنٰى ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلۡيُسۡرٰى ۝٧

और तक़्वा इख़तियार किया, और अच्छी बात की तस्दीक़ की, तो हम उस के लिए आसानी वाला घर आसान कर देंगे।

وَاَمَّا مَنۡۢ بَخِلَ وَاسۡتَغۡنٰى ۝٨ وَكَذَّبَ بِالۡحُسۡنٰى ۝٩ فَسَنُيَسِّرُهٗ

और जिस ने न दिया और जो बेपरवाह रहा, और अच्छी बात को झुठलाया, तो हम आसानी से सख्ती के

لِلۡعُسۡرٰى ۝١٠ وَمَا يُغۡنِىۡ عَنۡهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ۝١١

घर में उस को पहोंचा देंगे। और उस के कुछ काम नहीं आएगा उस का माल जब वो (गढ़े में) गिरेगा।

اِنَّ عَلَيۡنَا لَلۡهُدٰى ۝١٢ وَاِنَّ لَنَا لَلۡاٰخِرَةَ وَالۡاُوۡلٰى ۝١٣

हमारे ज़िम्मे अलबत्ता रास्ता दिखा देना है। और हमारे ही हाथ आखिरत और दुन्या है।

فَاَنۡذَرۡتُكُمۡ نَارًا تَلَظّٰى ۝١٤ لَا يَصۡلٰٮهَاۤ اِلَّا الۡاَشۡقَى ۝١٥

फिर मैं ने तुम्हें भड़कती हुई आग से डराया है। उस में वही बड़ा बदबख्त दाखिल होगा,

الَّذِىۡ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٦ وَسَيُجَنَّبُهَا الۡاَتۡقَى ۝١٧ الَّذِىۡ

जिस ने झुठलाया और ऐराज़ किया। और उस से दूर रखा जाएगा वो बड़ा मुत्तक़ी, जो

يُؤۡتِىۡ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝١٨ وَمَا لِاَحَدٍ عِنۡدَهٗ

तज़किए के लिए अपना माल देता है। और किसी का उस पर एहसान नहीं जिस का

مِنۡ نِّعۡمَةٍ تُجۡزٰٓى ۝١٩ اِلَّا ابۡتِغَآءَ وَجۡهِ رَبِّهِ الۡاَعۡلٰى ۝٢٠

बदला उतारा जाए। मगर उस के बुलन्दतरीन रब की रज़ा तलब करने के लिए।

ع ١٧ وَلَسَوۡفَ يَرۡضٰى ۝٢١

और बहोत जल्द वो राज़ी होगा।

اٰیَاتُهَا ١١ (٩٣) سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ (١١) رُكُوْعُهَا ١

उस में ११ आयतें हैं सूरह दुहा मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالضُّحٰى ۙ﴿١﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۙ﴿٢﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ؕ﴿٣﴾

चाश्त के वक़्त की क़सम! रात की क़सम जब वो तारीक हो जाए! के आप के रब ने आप को न छोड़ा है और न आप से दुश्मनी की है।

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ؕ﴿٤﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ

और अलबत्ता आखिरत पेहली वाली (दुन्या) से आप के लिए बेहतर है। और ज़रूर आप का रब आगे आप को देगा,

فَتَرْضٰى ؕ﴿٥﴾ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۪﴿٦﴾ وَ وَجَدَكَ ضَآلًّا

के आप राज़ी हो जाओगे। क्या आप को उस ने यतीम नहीं पाया के फिर ठिकाना दिया? और आप को बेखबर पाया,

فَهَدٰى ۪﴿٧﴾ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ؕ﴿٨﴾ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ

फिर उस ने राह दिखाई। और आप को मुफलिस पाया, फिर आप को ग़नी कर दिया। इस लिए आप किसी यतीम पर

فَلَا تَقْهَرْ ؕ﴿٩﴾ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ؕ﴿١٠﴾ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾ ع ١١/١٨

सख्ती न कीजिए। और किसी सवाल करने वाले को न झिड़किए। और अलबत्ता आप अपने रब की नेअमत को बयान कीजिए।

اٰیَاتُهَا ٨ (٩٤) سُوْرَةُ الْاِنْشِرَاحِ مَكِّيَّةٌ (١٢) رُكُوْعُهَا ١

उस में ८ आयतें हैं सूरह इन्शिराह मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ﴿١﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۙ﴿٢﴾

क्या हम ने आप के सीने को खोल नहीं दिया? और हम ने आप के ऊपर से आप का बोझ उतार दिया।

الَّذِیْۤ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۙ﴿٣﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ﴿٤﴾

जिस ने आप की कमर तोड़ रखी थी। और हम ने आप के खातिर आप का ज़िक्र बुलन्द किया।

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۙ﴿٥﴾ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ؕ﴿٦﴾

फिर बेशक सख्ती के साथ आसानी है। बेशक सख्ती के साथ आसानी है।

فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۙ﴿٧﴾ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿٨﴾ ع ٨/١٩

फिर जब आप फारिग़ हों, तो ज़्यादा मेहनत कीजिए। और अपने रब की तरफ रग़बत कीजिए।

اٰيَاتُهَا ٨ (٩٥) سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ (٢٨) رُكُوْعُهَا ١

उस में 8 आयतें हैं सूरह तीन मक्का में नाज़िल हुई और 1 रूकू है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ﴿١﴾ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿٢﴾ وَهٰذَا الْبَلَدِ

अन्जीर की क़सम! ज़ैतून की क़सम! तूरे सीना की क़सम! इस अमन वाले शेहर (मक्का)

الْاَمِيْنِ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ﴿٤﴾

की क़सम! यक़ीनन हम ने इन्सान को बेहतरीन सूरत में पैदा किया है।

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ﴿٥﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

फिर हम ने उस को फैंक दिया नीचों के नीचे में। मगर वो जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٦﴾ فَمَا يُكَذِّبُكَ

और नेक अमल करते रहे उन के लिए ऐसा अज्र होगा जो खत्म नहीं होगा। फिर कौन सी चीज़ उस के बाद तुझे

ع ٨ ١ ٢٠ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ﴿٧﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨﴾

हिसाब के झुठलाने पर आमादा करती है? क्या अल्लाह अहकमुल हाकिमीन नहीं है?

اٰيَاتُهَا ١٩ (٩٦) سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ (١) رُكُوْعُهَا ١

उस में १९ आयतें हैं सूरह अलक़ मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ﴿١﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ

आप अपने रब का नाम ले कर पढ़िए जिस ने (मखलूक़) बनाई। इन्सान को बनाया जमे हुए

مِنْ عَلَقٍ ﴿٢﴾ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ﴿٣﴾ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿٤﴾

खून से। आप पढ़िए और आप का रब सब से करीम है। जिस ने क़लम के ज़रीए इल्म दिया।

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿٥﴾ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ﴿٦﴾

इन्सान को वो इल्म दिया जो वो जानता नहीं था। हरगिज़ नहीं! यक़ीनन इन्सान अलबत्ता सरकशी करता है।

اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ﴿٧﴾ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ﴿٨﴾ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ

इस वजह से के वो देखता है के वो मुस्तग़नी है। यक़ीनन तेरे रब की तरफ लौटना है। क्या आप ने देखा

يَنْهٰى ۝٩ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ۝١٠ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ
उस शख्स को जो रोकता है। बन्दे को जब वो नमाज़ पढ़ता है? क्या आप ने देखा के अगर वो

عَلَى الْهُدٰٓى ۝١١ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ۝١٢ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٣
हिदायत पर है, या तक़्वे का हुक्म देता है? क्या आप ने देखा अगर वो झुठलाता है और ऐराज़ करता है?

اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ۝١٤ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ۬ لَنَسْفَعًا
क्या वो नहीं जानता के यक़ीनन अल्लाह देख रहा है? कोई बात नहीं! अगर वो बाज़ नहीं आएगा, तो हम उसे पेशानी के

بِالنَّاصِيَةِ ۝١٥ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝١٦ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۝١٧
बाल पकड़ कर घसीटेंगे। खताकार झूठी पेशानी के बाल पकड़ कर घसीटेंगे। फिर उसे चाहिए के अपनी मजलिस वालों को पुकारे।

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝١٨ كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝١٩ ع السجدة
हम भी ज़बानिया फरिश्तों को बुला लेते हैं। हरगिज़ नहीं! आप उस का केहना न मानिए और सज्दा कीजिए और अल्लाह से क़रीब हो जाइए।

السجدة ١٥ ع ١٩ ٢١

رُكُوْعُهَا ١ (٩٧) سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ (٢٥) اٰيَاتُهَا ٥

और १ रूकूअ है सूरह क़दर मक्का में नाज़िल हुई उस में ५ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝١ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝٢
यक़ीनन हम ने इसे लैलतुल क़द्र में नाज़िल किया। और आप को मालूम भी है के लैलतुल क़द्र क्या है?

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ۬ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝٣ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ
लैलतुल क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। फरिश्ते और रूह उस में अपने रब की इजाज़त से हर चीज़

فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝٤ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝٥ ع
के मुतअल्लिक़ हुक्म ले कर उतरते हैं। फज्र के तुलूअ होने तक सलामती रेहती है।

وقف النبي صلى الله عليه وسلم
معانقة عند المتأخرين ١٢
الثلث ع ٨ ٢٢

رُكُوْعُهَا ١ (٩٨) سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٠) اٰيَاتُهَا ٨

और १ रूकूअ है सूरह बय्यिना मदीना में नाज़िल हुई उस में ८ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ
जो लोग एहले किताब में से काफिर हैं और मुशरिकीन वो बाज़ आने वाले नहीं थे यहाँ तक के

حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۙ﴿١﴾ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ﴿٢﴾

उन के पास रोशन दलील आ जाए। (यानी) अल्लाह के पैग़म्बर जो पाक सहीफ़ों की तिलावत करते हैं।

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ؕ﴿٣﴾ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

जिन में मज़बूत किताबें हैं। और जिन को किताब दी गई वो अलग अलग फिरक़े नहीं हुए

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ؕ﴿٤﴾ وَمَاۤ اُمِرُوْۤا

मगर इस के बाद के उन के पास रोशन दलील आई। हालांके उन को हुक्म नहीं था

اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ۬ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا

मगर यही के वो इबादत करें अल्लाह की, उसी के लिए इबादत को खालिस रखते हुए, सब तरफ से एक ही के हो कर

الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ؕ﴿٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और यही सीधा दीन है। बेशक जो लोग

كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ

काफिर हुए एहले किताब में से और मुशरिकीन वो जहन्नम की आग में हमेशा

فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ؕ﴿٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

रहेंगे। यही लोग तमाम मखलूक़ में सब से बदतर हैं। यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और नेक अमल

الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ؕ﴿٧﴾ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

करते रहे, यही तमाम मखलूक़ में सब से बेहतर हैं। उन का बदला उन के रब के पास

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ

जन्नाते अद्न हैं, जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी जिन में वो हमेशा रहेंगे।

ع ٨ ٢٢ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ﴿٨﴾

अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से राज़ी हुए। ये उस शख्स के लिए है जो अपने रब से डरे।

اٰيَاتُهَا ٨ (٩٩) سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ (٩٣) رُكُوْعُهَا ١

उस में ८ आयतें हैं सूरह ज़िलज़ाल मदीना में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۙ﴿١﴾ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ

जब ज़मीन सख्त ज़लज़ले से हिला दी जाएगी। और ज़मीन अपने बोझ

اَثْقَالَهَا ۝٢ وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝٣ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ

निकाल देगी। और इन्सान कहेगा के ज़मीन को क्या हुवा? उस दिन ज़मीन अपनी खबरें बयान

اَخْبَارَهَا ۝٤ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝٥ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ

कर देगी। इस वजह से के तेरे रब ने उस को हुक्म दिया है। उस दिन इन्सान वापस लौटेंगे

اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝٦ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

मुख्तलिफ़ जमाअतें बन कर ताके वो अपने अमल (के नताइज) देखें। फिर जो ज़र्रा भर भलाई करेगा

خَيْرًا يَّرَهٗ ۝٧ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝٨ ع

तो उसे देखेगा। और जो ज़र्रा भर बुराई करेगा तो उसे देखेगा।

رُكُوْعُهَا ١ (١٠٠) سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ (١٤) اٰيَاتُهَا ١١

और १ रूकूअ है सूरह आदियात मक्का में नाज़िल हुई उस में ११ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝١ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝٢ فَالْمُغِيْرٰتِ

हांपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम! फिर उन घोड़ों की क़सम जो टाप मार कर आग निकालने वाले हैं! फिर उन घोड़ों की

صُبْحًا ۝٣ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝٤ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝٥

क़सम जो सुबह के वक्त (दुशमन पर) हमला करने वाले हैं! फिर उस वक़्त गुबार उड़ाने वाले हैं। फिर वो फौज में घुस जाते

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۝٦ وَاِنَّهٗ

हैं। बेशक इन्सान अपने रब का नाशुकरा है। और वो खुद

عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝٧ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۝٨

उस पर मुत्तलेअ है। और वो माल की महब्बत में अलबत्ता बड़ा सख्त है।

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ۝٩ وَحُصِّلَ

क्या वो नहीं जानता के जब उठाया जाएगा जो क़ब्रों में है। और ज़ाहिर कर दिया

مَا فِي الصُّدُوْرِ ۝١٠ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ

जाएगा जो कुछ सीनों में है। बेशक उन का रब उस दिन उन से

لَّخَبِيْرٌ ۝١١ ع

बाखबर है।

اٰيَاتُهَا ١١ (١٠١) سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ (٣٠) رُكُوْعُهَا ١

उस में ११ आयतें हैं सूरह क़ारिआ मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْقَارِعَةُ ۝١ مَا الْقَارِعَةُ ۝٢ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝٣

खड़खड़ाने वाली। क्या है खड़खड़ाने वाली? और आप को मालूम भी है के खड़खड़ाने वाली क्या है?

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝٤ وَتَكُوْنُ

जिस दिन इन्सान बिखरे हुए परवानों की तरह हो जाएंगे। और पहाड़

الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝٥ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٦

धुने हुए रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे। फिर जिस के पलड़े भारी होंगे,

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٧ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٨

तो वो खुशगवार ज़िन्दगी में होगा। और जिस के पलड़े हलके होंगे,

ع ١٦ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝٩ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۝١٠ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝١١

तो उस का ठिकाना हाविया है। और आप को मालूम है के वो क्या है? देहेकती आग है।

اٰيَاتُهَا ٨ (١٠٢) سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ (١٦) رُكُوْعُهَا ١

उस में ११ आयतें हैं सूरह तकासुर मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ۝١ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝٢ كَلَّا سَوْفَ

एक दूसरे पर(दुन्या के ज़रिए) बाज़ी ले जाने की हिर्स ने तुम्हें ग़ाफिल रखा। यहाँ तक के तुम क़ब्रस्तान पहोंच जाते हो।कोई बात नहीं!

تَعْلَمُوْنَ ۝٣ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٤ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ

आगे तुम्हें मालूम होगा। फिर कोई बात नहीं! आगे तुम्हें मालूम होगा। कोई बात नहीं! अगर तुम जानते इल्मुल यक़ीन

عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝٥ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝٦ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا

के तौर पर (तो ऐसा न करते), तुम ज़रूर दोज़ख को देखोगे। फिर तुम ज़रूर उस को

ع ١٧ عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝٧ ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝٨

यक़ीन की आँख के साथ देखोगे। फिर तुम से उस दिन नेअमतों के मुतअल्लिक़ ज़रूर सवाल होगा।

ايَاتُهَا ٣ (١٠٣) سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ (١٣) رُكُوْعُهَا ١

उस में ३ आयतें हैं सूरह अस्र मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالْعَصْرِ ۝١ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝٢ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ज़माने की क़सम! बेशक इन्सान खसारे में है। मगर वो लोग जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣ ع ١ ٣ ٢٨

और नेक अमल करते रहे और हक़ की एक दूसरे को तलक़ीन की और एक दूसरे को सब्र की तलक़ीन की।

ايَاتُهَا ٩ (١٠٤) سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ (٣٢) رُكُوْعُهَا ١

उस में ९ आयतें हैं सूरह हुमज़ह मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝١ اِۨلَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢ يَحْسَبُ

हलाकत है हर पीठ पीछे ऐब निकालने वाले के लिए, ताना देने वाले के लिए। जिस ने माल जमा किया और उस को गिन गिन कर

اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۝٣ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝٤

रखा। वो समझता है के उस का माल उसे हमेशा ज़िन्दा रखेगा। हरगिज़ नहीं! ज़रूर उसे हुतमह में फैंक दिया जाएगा।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦ الَّتِيْ تَطَّلِعُ

और आप को मालूम भी है के हुतमह क्या है? अल्लाह की भड़काई हुई आग है। जो दिलों को

عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩ ع ١ ٩ ٢٩

झांक लेती है। बेशक वो दोज़ख (हुतमह) उन को लम्बे सुतूनों में बांध कर ऊपर से बन्द कर दी जाएगी।

ايَاتُهَا ٥ (١٠٥) سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ (١٩) رُكُوْعُهَا ١

उस में ५ आयतें हैं सूरह फील मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ يَجْعَلْ

क्या आप ने नहीं देखा के आप के रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया? क्या उन का

كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝۲ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝۳

मक्र नाकाम नहीं कर दिया? और उन पर झुन्ड के झुन्ड परिन्दे भेजे।

ع تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝۴ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝۵

जो उन पर कंकर की पथरियाँ फैंकते थे। फिर अल्लाह ने उन को खाए हुए भूसे की तरह बना दिया।

اٰيَاتُهَا ۴	(۱۰۶) سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَّكِّيَّةٌ (۲۹)	رُكُوْعُهَا ۱
उस में ४ आयतें हैं	सूरह कुरैश मक्का में नाज़िल हुई	और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝۱ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝۲

कुरैश की उल्फत की वजह से। उन के गर्मी और सर्दी के सफर से उल्फत की वजह से।

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝۳ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ

फिर उन्हें चाहिए के इस घर के मालिक की इबादत करें। जिस ने उन्हें भूक में

ع مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝۴

खाना दिया और जिस ने उन्हें खौफ से अमन दिया।

اٰيَاتُهَا ۷	(۱۰۷) سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ (۱۷)	رُكُوْعُهَا ۱
उस में ७ आयतें हैं	सूरह माऊन मक्का में नाज़िल हुई	और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝۱ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ

क्या आप ने देखा उस शख्स को जो इन्साफ होने को झुठलाता है? फिर ये वही है जो यतीम को धक्के

الْيَتِيْمَ ۝۲ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝۳ فَوَيْلٌ

देता है। और मिस्कीन को खाना देने की तरग़ीब नहीं देता। फिर हलाकत है

لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝۴ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝۵

उन नमाज़ियों के लिए। जो अपनी नमाज़ को भूल जाते हैं।

ع الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝۶ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝۷

जो दिखावा करते हैं। और मामूली चीज़ को भी मना करते हैं।

اٰیَاتُهَا ۳ (۱۰۸) سُوْرَةُ الْکَوْثَرِ مَکِّیَّةٌ (۱۵) رُکُوْعُهَا ۱

उस में ३ आयतें हैं सूरह कौसर मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِنَّاۤ اَعْطَیْنٰكَ الْکَوْثَرَ ۝۱ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝۲

बेशक हम ने आप को कौसर अती की। इस लिए आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और कुरबानी कीजिए।

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝۳ ع ۱ ۳ ۳۳

यक़ीनन आप का दुशमन वही दुम कटा है।

اٰیَاتُهَا ۶ (۱۰۹) سُوْرَةُ الْکٰفِرُوْنَ مَکِّیَّةٌ (۱۸) رُکُوْعُهَا ۱

उस में ६ आयतें हैं सूरह काफिरून मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْکٰفِرُوْنَ ۝۱ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝۲

आप फरमा दीजिए ऐ काफिरो! मैं इबादत नहीं करता उस की जिस की तुम इबादत करते हो। और न तुम

وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝۳ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝۴

इबादत करते हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। और न मैं इबादत करने वाला हूँ उस की जिस की तुम इबादत करते हो। और न

وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝۵ لَکُمْ دِیْنُکُمْ وَلِیَ دِیْنِ ۝۶ ع ۱ ۲ ۳۴

तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन है।

اٰیَاتُهَا ۳ (۱۱۰) سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِیَّةٌ (۱۱۴) رُکُوْعُهَا ۱

उस में ३ आयतें हैं सूरह नस्र मदीना में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝۱ وَرَاَیْتَ النَّاسَ

जब अल्लाह की नुसरत और फ़त्ह आ जाए। और आप इन्सानों को देखें के

یَدْخُلُوْنَ فِیْ دِیْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝۲ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ

अल्लाह के दीन में फौज दर फौज दाखिल हो रहे हैं। तो अपने रब की हम्द के साथ

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم ١٢ ع ٢١ / ١٥

رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝٣

तस्बीह कीजिए और उस से मग़फिरत तलब कीजिए। यक़ीनन वो तौबा क़बूल करने वाला है।

اٰيَاتُهَا ٥ (١١١) سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ (٦) رُكُوْعُهَا ١

उस में ५ आयतें हैं सूरह लहब मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ

अबू लहब के दोनों हाथ टूटें और वो मरे। न उस के काम आया उस का माल

وَمَا كَسَبَ ۝٢ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ

और न उस की कमाई। अनक़रीब वो शौले वाली आग में दाखिल होगा, वो भी और उस की बीवी भी।

ع ١/ ٢٢

حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

जो लकड़ियाँ उठाने वाली है। उस की गर्दन में मज़बूत बटी हुई रस्सी होगी।

اٰيَاتُهَا ٤ (١١٢) سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ (٢٢) رُكُوْعُهَا ١

उस में ४ आयतें हैं सूरह इख्लास मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ٥ۙ

आप फरमा दीजिए के वो अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है। न उस से कोई पैदा हुवा

ع ١/ ٢٣

وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

और न वो किसी से पैदा हुवा। और न उस के बराबर का कोई है।

اٰيَاتُهَا ٥ (١١٣) سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ (٢٠) رُكُوْعُهَا ١

उस में ५ आयतें हैं सूरह फलक़ मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَ

आप फरमा दीजिए मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूँ। उस की मखलूक़ के शर से। और

مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ

अन्धेरी रात के शर से जब वो आ जाए। और गिरहों में दम करने

فِي الْعُقَدِ ۝٤ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥ ع

वालियों के शर से। और हसद करने वाले के शर से जब वो हसद करे।

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ (٢١) (١١٤) — اٰيَاتُهَا ٦ — رُكُوْعُهَا ١

और १ रूकूअ है — सूरह नास मक्का में नाज़िल हुई — उस में ६ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝١ مَلِكِ النَّاسِ ۝٢ اِلٰهِ

आप फ़रमा दीजिए मैं पनाह मांगता हूँ तमाम इन्सानों के रब की। तमाम इन्सानों के बादशाह की। तमाम इन्सानों

النَّاسِ ۝٣ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۝٤ الَّذِيْ

के माबूद की। वसवसा डालने वाले, पीछे हटने वाले (शैतान) के शर से। जो

يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝٥ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦ ع

वसवसा डालता है लोगों के दिलों में। वो जिन्नात में से हो और इन्सानों में से हो।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

ऐ हमारे रब! तू हमारी तरफ से क़बूल फरमा। यक़ीनन तू सुनने वाला, इल्म वाला है।

وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

और तू हमारी तौबा क़बूल फरमा। यक़ीनन तू तौबा कबूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

फहरिस्त

सूरत नम्बर	सूरत का नाम	पारा नम्बर	सफहा नम्बर	सूरत नम्बर	सूरत का नाम	पारा नम्बर	सफहा नम्बर
1	फातिहा	1	2	29	अन्कबूत	20,21	552
2	बक़रह	1,2,3	3	30	रूम	21	562
3	आले इमरान	3,4	68	31	लुक़मान	21	571
4	निसा	4,5,6	106	32	सज्दा	21	577
5	माइदा	6,7	147	33	अहज़ाब	21,22	581
6	अन्आम	7,8	177	34	सबा	22	595
7	आराफ	8,9	209	35	फातिर	22	603
8	अन्फाल	9,10	246	36	यासीन	22,23	611
9	तौबा	10,11	260	37	साफ्फात	23	618
10	यूनुस	11	288	38	सॉद	23	628
11	हूद	11,12	308	39	ज़ुमर	23,24	635
12	यूसुफ	12,13	328	40	मुअमिन	24	647
13	रअद	13	346	41	हा मीम सज्दा	24,25	659
14	इब्राहीम	13	355	42	शूरा	25	668
15	हिज्र	13,14	364	43	ज़ुखरूफ	25	677
16	नहल	14	372	44	दुखान	25	687
17	बनी इस्राईल	14	393	45	जासिया	25	691
18	कहफ	15,16	408	46	अहक़ाफ	26	697
19	मरयम	16	425	47	मुहम्मद	26	704
20	ताहा	16	435	48	फत्ह	26	710
21	अम्बिया	17	449	49	हुजुरात	26	716
22	हज	17	462	50	क़ॉफ	26	721
23	मुअमिनून	18	477	51	ज़ारियात	26,27	725
24	नूर	18	487	52	तूर	27	729
25	फुरक़ान	18,19	501	53	नज्म	27	732
26	शुअरा	19	511	54	क़मर	27	736
27	नम्ल	19,20	525	55	रह़मान	27	740
28	क़सस	20	537	56	वाक़िआ	27	745

सूरत नम्बर	सूरत का नाम	पारा नम्बर	सफ़हा नम्बर	सूरत नम्बर	सूरत का नाम	पारा नम्बर	सफ़हा नम्बर
57	हदीद	27	750	87	अअला	30	831
58	मुजादला	28	757	88	ग़ाशियह	30	832
59	हश्र	28	761	89	फज्र	30	833
60	मुमतहिनह	28	766	90	बलद	30	835
61	सफ	28	770	91	शम्स	30	836
62	जुमुअह	28	773	92	लैल	30	837
63	मुनाफिकून	28	775	93	जुहा	30	838
64	तग़ाबुन	28	777	94	इन्शिराह	30	838
65	तलाक़	28	780	95	तीन	30	839
66	तहरीम	28	783	96	अलक़	30	839
67	मुल्क	29	787	97	क़द्र	30	840
68	क़लम	29	790	98	बय्यिनह	30	840
69	हॉक़्क़ह	29	794	99	ज़िलज़ाल	30	841
70	मआरिज	29	797	100	आदियात	30	842
71	नूह	29	800	101	क़ारिअह	30	843
72	जिन्न	29	803	102	तकासुर	30	843
73	मुज़्ज़म्मिल	29	806	103	अस्र	30	844
74	मुद्दस्सिर	29	808	104	हुमज़ह	30	844
75	क़ियामह	29	811	105	फील	30	844
76	दहर	29	813	106	क़ुरैश	30	845
77	मुरसलात	29	816	107	माऊ़न	30	845
78	नबअ	30	819	108	कौसर	30	846
79	नाज़िआत	30	821	109	काफिरून	30	846
80	अबस	30	822	110	नस्र	30	846
81	तकवीर	30	824	111	लहब	30	847
82	इन्फितार	30	825	112	इख्लास	30	847
83	मुतफ्फिफीन	30	826	113	फलक़	30	847
84	इन्शिक़ाक़	30	828	114	नास	30	847
85	बुरूज	30	829				
86	तारिक़	30	830				